एम. ए. अंतिम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र

भारतीय संगीत का इतिहास

समय– 3 घण्टे पूर्णांक– 100

1. श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न नाप (प्रमाण श्रुति, उपमहती श्रुति और महती श्रुति) । भरत, शारंगदेव, रामामात्य, व्यंकटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।
2. प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार । प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों एवं वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं (दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली) का अध्ययन। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन।
3. मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन। 'स्वरमेल कलानिधी' 'राग तरंगिणी', 'संगीत पारिजात' एवं 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का परिचय।
4. मार्ग ताल एवं देशी ताल पद्धति का परिचय एवं ताल के दस प्राणों का अध्ययन। कर्नाटक संगीत पद्धति के प्रमुख गीत प्रकारों का अध्ययन।
5. 'अष्टछाप' के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय। अबुल फजल, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस. एम. टैगोर, इ. क्लीमेंट्स, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पं. कुमार गन्धर्व, उस्ताद अमीर खाँ (गायन), आचार्य बृहस्पति, श्री पी. साम्बामूर्ती और डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यो का परिचय।

Scanned by CamScanner

द्वितीय प्रश्न पत्र

निबंध, सांगीतिक रचना एवं राग विवरण

समय– 3 घण्टे पूर्णांक– 100

1. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।

अंक– 25

2. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।

अंक– 20

3. पाठ्यक्रम के रागों में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।

अंक– 10

4 अंकों के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को तालिपि में लिखने का ज्ञान। प्रचलित तालों को डेढ़ गुन (2 में 3) पौन गुन (4 में 3) सवा गुन (4 में 5) इन लयकारियों में लिखने का अभ्यास । अंक– 15

5. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन– अंक– 30

1. दरबारी कान्हड़ा 2. कौन्सी कान्हड़ा 3. आभोगी कान्हड़ा 4. नायकी कान्हड़ा 5. मियॉ की मल्हार 6. गौंड़ मल्हार 7. मेघ मल्हार 8. शुद्ध सारंग 9. मध्यमाद सारंग 10. गौड़ सारंग 11. रागेश्री 12. जोग कौन्स 13. मधुकौन्स 14. मधुवन्ती 15. कोमल रिषभ आसावरी 16. भटियार 17. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 18. विभास (भैरव थाट) 19. परज।

राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में टप्पा या ठुमरी।

(टीप– कुल 20 राग है।)

Scanned by CamScanner

तृतीय प्रश्न पत्र
संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

समय – 3 घण्टे पूर्णांक– 100

1. राग–रागिनी वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण एवं थाट–राग वर्गीकरण का अध्ययन। रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत सारंग, मल्हार एवं कान्हड़ा रागांगों का अध्ययन।
2. ख्यालं गायन कें आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों के परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का (सितार–सरोद) घराना, उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का (सितार) घराना एवं प्रमुख सारंगी, बेला (वायलिन) तथा बॉसुरी वादकों का शैलीगत परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।
3. भारतीय संगीत में वृन्दगान एवं वृन्दवादन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की जानकारी।
4. सौन्दर्य शास्त्र का परिचय, कला की परिभाषा, कलाओं की संख्या और प्रकार। रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध तथा इस विषय पर आधुनिक विचारधारा का अध्ययन।
5. शोध प्रविधि का सामान्य अध्ययन– अनुसंधान की परिभाषा एवं प्रक्रिया। भारतीय संगीत में शोध की दिशाऐं। शोध विषय का चयन। शोध विषय की रूप रेखा। ग्रन्थ सूची।

Scanned by CamScanner

एम. ए. अंतिम वर्ष,
प्रायोगिक मौखिक

समय 1 घण्टा पूर्णांक– 300

1. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन–

   निम्नलिखित 8 रागों में एक बड़ा ख्याल या विलम्बित रचना (गत) तथा एक छोटा ख्याल या मध्यलय की रचना (गत) का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन–

अ– 1. दरबारी कान्हड़ा 2. मियाँ मल्हार 3. शुद्ध सारंग 4. रागेश्री 5. जोग कौन्स 6. भटियार 7. कौन्सी कान्हड़ा 8. गौड़ सारंग।

ब– निम्नलिखित रागों का समान्य ज्ञान एवं मध्यलय की रचना का आलाप–तान सहित प्रदर्शन–

1. आभोगी कान्हड़ा 2. नायकी कान्हड़ा 3. गौंड़ मल्हार 4. मेघ मल्हार 5. मध्यमादी सारंग 6. मधुकौन्स 7. मधुवन्ती 8. कोमल रिषभ आसावरी 9. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 10. विभास (भैरव) 11. परज।

स– राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी का गायन। वाद्य के विद्यार्थी द्वारा इन रागों में से किसी एक राग में ठुमरी शैली का वादन या धुन का प्रदर्शन। (टीप– कुल 20 राग है।)

2. उपर्युक्त रागों में से एक ध्रुपद एक धमार (उपज सहित) एवं एक तराने, त्रिवट/चतुरंग का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

Scanned by CamScanner

(ध्रुपद के विद्यार्थियों के लिए)

अ – मौखिक परीक्षा के खण्ड अ के 8 रागों में ध्रुपद/धमार की विलम्बित एवं मध्यलय की रचनाओं का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन।

ब – इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम के खण्ड ब के 11 रागों में ध्रुपद /धमार शैली की मध्यलय की बंदिशों का (गायकी सहित) प्रदर्शन। (कुछ बन्दिशें सूलताल, तीव्रा, आड़ाचौताल अथवा झपताल में प्रस्तुत करना।)

स – पाठ्यक्रम के किसी भी राग में एक विलंबित ख्याल, एक द्रुत ख्याल, एक तराना तथा एक चतुरंग/त्रिवट का गायकी सहित प्रदर्शन।

एम. ए. अंतिम वर्ष
प्रायोगिक मंच प्रदर्शन

पूर्णांक– 150

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 30 मिनट में विलंबित एवं मध्यलय की रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन। (ध्रुपद के परीक्षार्थी ध्रुपद/धमार प्रस्तुत करेंगे।)
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।
   (ध्रुपद के विद्यार्थी सूलताल, तीव्रा, आड़ाचौताल अथवा झपताल में बंदिश प्रस्तुत करेंगे।)

Scanned by CamScanner